भाकृअनुप - राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक 753 006

कृषि-सलाहकार सेवा

अक्टूबर 2023 के प्रथम पखवाड़ा की रणनीतियां

- *देर से रोपाई की गई धान में, दौजियां निकलने के चरण पर (रोपाई करने के (50-55 दिन बाद) 17.5 किग्रा यूरिया प्रति एकड़ की दर से उर्वरक की दूसरी शीर्ष ड्रेसिंग प्रयोग करें जबकि रेतीली मिट्टी में 17.5 किग्रा यूरिया + 13 किग्रा एमओपी प्रति एकड़ डालें।*
- *पत्ता मोड़क को नियंत्रित करने के लिए जब भी दो मुड़े हुए पत्ते/पूंजा दिखाई दें, तो क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5% एससी/60 मिली/एकड़ या टेट्रानिलिप्रोल 200 एससी 100−120 मिली/एकड़ की दर से या फ्लूबेनडियामाइड 20डब्ल्यूजी 50 ग्राम/एकड़ या क्वीनालफास 25ईसी 64 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। छिड़काव के लिए प्रति एकड़ 200 लीटर पानी का प्रयोग करें।*
- *झुंड वाली इल्लियों/केस वर्म/हिस्पा कीटों के प्रकोप की स्थिति में क्लोरपाइरीफॉस 20ईसी 400 मिली/एकड़ दर पर या फेंथोएट 50% ईसी 400 मिली/एकड़ की दर से या ट्रायजोफोस 40% ईसी 500 मिली/एकड़ दर पर का छिड़काव करें। छिड़काव के लिए प्रति एकड़ 200 लीटर पानी का प्रयोग करें।*
- *गॉल मिज संक्रमण होने पर फिप्रोनिल 5% ईसी 600 मिली/एकड़ दर पर छिड़काव करें या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5% ईसी 100 मिली/एकड़ दर पर या कार्बोसल्फान 25% ईसी 400 मिली/एकड़ या करटाप हाइड्रोक्लोराइड 4जी 10 किग्रा/एकड़ दर पर या कार्बोफुरन 3जी 10 किग्रा/एकड़ दर पर प्रयोग करें।*
- *यदि भूरा पौध माहू की संख्या लागत-लाभ की सीमा (5-10 कीट/पूंजा) से अधिक है, तो वैकल्पिक गीला और सुखाने की तकनीक (पानी लंबे समय तक खेत में खड़ा नहीं होना चाहिए) द्वारा धान के खेत की सूक्ष्म जलवायु को बदलने की सलाह दी जाती है। यदि समस्या फिर भी बनी रहती है, तो ट्राइफ्लुमेज़ोपाइरिम 10% एससी 94 मिली/एकड़ दर पर या पाइमेट्रोज़ीन 50% डब्ल्यूजी 120 ग्राम/एकड़ दर पर या डाइनोटफ्यूरन 20% एसजी 80 ग्राम/एकड़ दर पर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एसएल 50 मिली/एकड़ दर पर या फ्लोनिकैमिड 50% डब्लूजी 60 ग्राम/एकड़ दर पर छिड़काव करें। भूरा पौध माहू के लिए अनुशंसित कीटनाशकों का प्रयोग निर्धारित मात्रा में ही करें। भूरा पौध माहू के संक्रमण के दौरान नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों के प्रयोग से बचें।*
- *यदि 1-2 दौजी में आच्छद अंगमारी प्रकोप देखा जाता है, प्रोपिकोनाज़ोल 75% 200 मिली/एकड़ दर पर या हेक्साकोनाज़ोल 50% 400 मिली/एकड़ दर पर या वैलिडैमाइसिन 3L 400 मिली/एकड़ दर पर या टेबुकोनाज़ोल 50% + ट्राइफ़्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% डब्ल्यूजी 80 ग्राम/एकड़ दर पर छिड़काव करें। छिड़काव को 7-10 दिनों के अंतराल पर दोहराएं। एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।*
- *जीवाणुज अंगमारी/जीवाणुज पत्ता अंगमारी होने की स्थिति में, नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों (यूरिया/डीएपी) की शीर्ष ड्रेसिंग बंद करें। यदि संभव हो तो जहां जल जमाव की स्थिति हो, वहां से पानी निकाल दें। स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट (9%) + टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड (1%) 200 ग्राम/एकड़ दर पर सहित कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 200 ग्राम/एकड़ दर पर डालें। छिड़काव सुबह या दोपहर के समय करना चाहिए।*
- *यदि पत्ता प्रध्वंस देखा जाता है, बीमारी को नियंत्रित करने के लिए टेबुकोनाजोल 50% + ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% (नैटिवो 75 डब्ल्यूजी) 80 ग्राम प्रति एकड़ दर पर या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी 400 ग्राम प्रति एकड़ दर पर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। वैकल्पिक रूप से, बेल के*

पत्तों (25 ग्राम ताजी पत्तियां) का निचोड़ का छिड़काव या तुलसी (25 ग्राम ताजी पत्तियां) या नीम (200 ग्राम ताजी पत्तियां) प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने पर रोग कम करने में मदद कर सकता है। इसके अलावा, ट्राइकोडर्मा विरिडे जैसे जैवनियंत्रक कारक (न्यूनतम 106) सीएफयू) 2 किलो प्रति एकड़ दर पर प्रयोग किया जा सकता है। एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।

- *फाल्स स्मट: कॉपर हाइड्रॉक्साइड 77% (कोसाइड 101) 400 ग्राम/एकड़ दर पर या टेबुकोनाज़ोल 25% (फोलिकूर) 400 ग्राम/एकड़ दर पर बूट लीफ अवस्था में छिड़काव करें। फाल्स स्मट के प्रभावी नियंत्रण के लिए छिड़काव को सात दिनों के अंतराल पर दोहराएं।*
- *किसानों को सलाह दी जाती है कि चावल की खेती के सभी पहलुओं के लिए एनआरआरआई द्वारा विकसित राइसएक्सपर्ट मोबाइल ऐप (गूगल प्ले स्टोर में उपलब्ध) को डाउनलोड करें और उसका उपयोग करें।*
- *जहां नमी की कमी के कारण चावल नहीं उगाए गए हैं, वहां किसानों को सलाह दी जाती है कि वे उपलब्ध खेत में मिट्टी नमी का उपयोग करते हुए कम अवधि वाली रबी पूर्व फसलें जैसे एमरनथस, रागी, कुल्थी, उड़द, चना, लोबिया, शकरकंद और तिल को उच्च भूमि में उगाएं।*

भारी वर्षा या कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए आकस्मिक कृषि-परामर्श

- *जहां अधिक वर्षा हुई हो, संभव हो तो चावल के खेतों से अतिरिक्त पानी निकाल दें।*
- *वर्तमान स्थिति (बादल भरे आकाश, उच्च आर्द्रता, उच्च दिन के तापमान के साथ रुक-रुक कर वर्षा (उदाहरण के लिए, कालाहांडी, नुआपाड़ा) लेकिन रात का कम तापमान) जीवाणुज अंगमारी, जीवाणुज पत्ता आच्छद, पत्ता प्रध्वंस आदि जैसी कई बीमारियों के लिए अत्यधिक अनुकूल है। अपने क्षेत्र पर निगरानी रखें. जीवाणुजन्य रोगों के लिए 10 लीटर पानी में 1 ग्राम प्लांटोमाइसिन + 20 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड मिलाकर प्रयोग करें। यदि धान के खेत में पत्ता प्रध्वंस की समस्या दिखाई दे तो टेबुकोनाजोल 50% + ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% डब्ल्यूजी 2 ग्राम/5 लीटर पानी की दर से या आइसोप्रोथियोलेन 40 ईसी 1.5 मिली प्रति लीटर दर से पानी में मिलाकर छिड़काव करें। 7-10 दिन के अंतराल पर छिड़काव दोहराएँ।*

जल एवं रोग प्रबंधन:

सुंदरगढ़ और देवगढ़:

- *धान की रोपाई से लेकर दौजी निकलने तक 0.5 इंच पानी की जरूरत होती है। इसके बाद से दाना बनने तक खेत में 2 इंच पानी रखें। बुआई करने के 21 दिन बाद धान में 8 किग्रा नाइट्रोजन/एकड़ डालें।*

मयूरभंज और क्योंझर: किसानों को धान के खेत में 3-5 सेमी जल स्तर बनाए रखने की सलाह दी जाती है। खेत में कीटनाशकों का छिड़काव किया जा सकता है।

स्मार्टफोन धारक मेघदूत, मौसम और दामिनी ऐप से स्थान विशेष के मौसम की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

- *सिंचाई के लिए पुष्पगुच्छ का निलकलना एक महत्वपूर्ण चरण है। यदि खेत सूखा हो तो सिंचाई करें।*
- *धान के खेत में यूरिया की टॉप ड्रेसिंग की जा सकती है।*
- *खेत से खरपतवार हटा दें। खेत में जल स्तर बनाये रखना चाहिए*
- *जीवाणुज पत्ता अंगमारी और आच्छद अंगमारी रोगों के लिए, हेक्साकोनाज़ोल + प्लांटोमाइसिन 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।*
- *प्रध्वंस रोग प्रबंधन के लिए, मुख्य खेत में ट्राइसाइक्लाजोल 75 डब्ल्यूपी 200 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 100 ग्राम/एकड़ दर से छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।*
- *भूरा धब्बा रोग के प्रबंधन के लिए प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी 1 मिली/लीटर पानी का प्रयोग करें। यदि तना छेदक का हमला दिखे तो कार्बोफ्यूरान 30 किग्रा/हेक्टेयर की दर से डालें।*

बालासोर, भद्रक एवं जाजपुर:

- *यदि धान की फसल जलमग्न होने से प्रभावित हो तो तत्काल नाइट्रोजन उर्वरक न डालें।*
- *वर्षा के बाद पत्ता मोड़क का प्रकोप बढ़ जाएगा, इसलिए कार्टाहाइड्रोक्लोराइड 400 ग्राम/एकड़ की दर से या लैम्बडासाइहेलोथ्रिल 4.9 सीएस 300 मिली/एकड़ की दर से प्रयोग करें।*
- *फेरोमोन और लाइट ट्रैप लगाकर खेत का लगातार निगरानी करके पीला तना छेदक की गतिविधि पर नजर रखें।*
- *कुछ क्षेत्रों में जीवाणुज पत्ता अंगमारी और जीवाणुज पत्ता आच्छद रोग की घटनाएं दिखाई देने पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 500 ग्राम की दर से एवं प्लांटोमाइसिन 200 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करें। मिट्टी में एमओपी 12.5 किलोग्राम/एकड़ की अतिरिक्त खुराक डालने की सिफारिश की गई है।*
- *वर्षा के बाद पत्ता मोड़क और पीला तना छेदक का प्रकोप बढ़ जाएगा, इसलिए कार्टाहाइड्रोक्लोराइड 50एसपी 400 ग्राम/एकड़ या फिप्रोनिल 5 एससी 400 मिली/एकड़ डालें।*

कटक, गंजाम, जगतसिंगपुर, केंद्रपड़ा, पुरी, नयागढ़ और खोर्धा

- *धान में जीवाणुज पत्ता अंगमारी रोग के संक्रमण की संभावना है। यदि देखा जाए, तो कॉपर हाइड्रॉक्साइड 53.8% डीएफ 600-ग्राम/एकड़ की दर से या 200-ग्राम प्लांटोमाइसिन के साथ कॉपर ऑक्सी क्लोराइड 50% उब्ल्यूपी 600-ग्राम/एकड़ की दर से छिड़काव करें।*

भूरा पौध माहू

धान में भूरा पौध माहू संक्रमण की संभावना रहती है। यदि 10-15 कीट/पूंजा दिखे, तो पाइमेट्रोज़िन 50% डब्लूजी 120 ग्राम/एकड़ की दर से या

डायनोटफ्यूरान 20% एसजी 80 ग्राम/एकड़ की दर से या फ़्लोनिकामिड 50% डब्लूजी 60 ग्राम/एकड़ या ट्राइफ्लुमेज़ोपाइरिम 10% एससी 100 मिली/ एकड़ दर से पौधे के मूल पर छिड़काव करें।

कंधमाल, गजपति, रायगड़ा

- *जिंक की कमी वाली मिट्टी में, यदि भूमि की अंतिम तैयारी के दौरान जिंक सल्फेट का उपयोग नहीं किया गया है, तो चावल की रोपाई के 30 और 45 दिन बाद* ***Zn-EDTA*** *0.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।*
- *बारी-बारी से गीला करना और सुखाने से प्रध्वंस रोग उत्पन्न हो सकता है। बारिश के बाद आच्छद विगलन और आच्छद अंगमारी रोग हो सकता है।*
- *प्रध्वंस रोग को नियंत्रित करने के लिए नाइट्रोजन उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग रोकें। फसल-खरपतवार प्रतिस्पर्धा को कम करने के लिए धान की फसल में निराई करनी चाहिए।*

कोरापुट, नवरंगपुर, मालकानगिरी, अनुगुल, ढेंकनाल

- *अधिक उपज देने वाली किस्मों के लिए 35 किलोग्राम यूरिया/एकड़ और संकर के लिए दौजी निकलने की चरण में 42 किलोग्राम यूरिया/एकड़ डालें।*
- *वर्तमान मौसम धान में प्रध्वंस रोग का कारण बन सकता है। इसके नियंत्रण के लिए टेबुकोनाज़ोल 50% + ट्राइफ्लोक्सीस्ट्रोबिन 25% डब्ल्यूजी 0.4 ग्राम/लीटर पानी की दर से या ट्राइसाइक्लाज़ोल 45% + हेक्साकोनाज़ोल 10% डब्ल्यूजी 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।*
- *तना छेदक और पत्ती मोड़क के संक्रमण की संभावना रहती है। यदि खेत में पाया जाए तो क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5% एससी 0.3 मिली/लीटर पानी की दर से या फ्लुबेन्डियामाइड 20% डब्ल्यूजी 0.25 ग्राम/लीटर पानी की दर से का छिड़काव करें।*
- *जीवाणुज पत्ता अंगमारी रोग को नियंत्रित करने के लिए आसमान साफ होने पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डब्ल्यूपी 3 ग्राम की दर से और स्ट्रेप्टोमाइसिन + टेट्रासाइक्लिन (90+10) 0.15 ग्राम/लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।*

झारसुगुड़ा, संबलपुर, बलांगीर, सोनपुर, बरगढ़, बौध

- *पौधों की बेहतर वृद्धि के लिए किसानों को धान के खेत में 5 सेमी पानी बनाए रखने और खेत के अतिरिक्त पानी को संग्रहित करने के लिए मेड़ बनाने की सलाह दी जाती है।*

- *पिछले मौसम की स्थिति धान के खेतों में विभिन्न कीटों (तना छेदक, पत्ती मोड़क आदि) के संक्रमण के लिए अनुकूल है, इसलिए इसकी नियमित निगरानी की सलाह दी जाती है। यदि संक्रमण देखा जाए, तो साफ मौसम की स्थिति में रेनैक्सिपायर 18.5% एससी 0.3 मिलीलीटर की दर से या कार्टेप हाइड्रोक्लोराइड 50 एसपी 1.25-1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।*